f'k{kd f'k{kk e ub rduhd dh mi;kfxrk

Mk0 jkd'k pUn
हिन्दी विभाग, जे0वी0जैन कालेज, सहारनपुर (उ0प्र0), भारत

शिक्षा की अवधारणा एक व्यापक अवधारणा है। शिक्षा एवं शिक्षण के क्षेत्र में अब तक हम जिन उपकरणों का प्रयोग करते रहे हैं, आज के आधुनिक परिवेश में वे नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं। सूचना तकनीकी के विकास ने हमें नई–नई तकनीकियों की जो सौगात दी है, वे शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक एवं प्रगतिगामी परिणाम उत्पन्न करते हुए, हमें उन्नति के पथ पर जे जाने में पूरी तरह सक्षम हैं।

शिक्षा मानव क्रिया के लिये अनिवार्य एवं आरम्भिक बिन्दु हैं। इसके माध्यम से ही हम किसी क्षेत्र विशेष में सार्थक परिवर्तन कर विकास के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। आधुनिक समय मे शिक्षा अनेक समस्याओं से ग्रस्त है, शिक्षा के प्रति उदासीनता, नकल की बढ़ती प्रवृत्ति, अध्यापक शिक्षा के प्रति उदासीनता आदि इसी प्रकार की कुछ समस्याएं हैं, जिनका निराकरण शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से ही किया जा सकता है। यही कारण है कि आज के वर्तमान परिवेश मे शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के लिये शैक्षिक तकनीक आवश्यक ही नहीं महत्वपूर्ण भी है।

छात्रों को ठीक प्रकार से जानकारी प्रदान करने के लिये शिक्षकों को ज्ञान के साथ–साथ शिक्षण विधियों की भी उचित जानकारी होनी चाहिये। अच्छी शिक्षा के लिये शिक्षकों को नवीन शैक्षिक विधियों, शैक्षिक यन्त्रों की जानकारी एवं उसके प्रयोग में निपुण होना होगा। आधुनिक समय में शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी का विशेष स्थान है। शैक्षिक तकनीकी के कठोर उपागम के अन्तर्गत रेडियो, टी0वी0, कम्प्यूटर, टेली कान्फ्रेसिंग आदि का प्रयोग शिक्षण क्रिया तथा प्रशिक्षण आदि में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। मुक्तशिक्षा और दूरस्थ शिक्षा तो कठोर उपागमो पर ही निर्भर होती जा रही है। ये उपागम अधिगम तथा अधिगम की परिस्थितियों को गुणवत्तायुक्त बनाने मे प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। कम्प्यूटर शिक्षा की भूमिका शिक्षण प्रशिक्षण में अनिवार्य होती जा रही है। इन्टरनेट के माध्यम से हम अपनी विविध समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम होते जा रहे हैं।

आधुनिक समय में शैक्षिक तकनीकी सूचना संचार का पर्याय बन चुकी है। उच्चशिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक संस्थाओं को इन्टरनेट से जोडने पर विशेष बल दिया जा रहा है। वर्तमान में दृश्य–श्रव्य प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षण की प्रभावशीलता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। मनोवैज्ञानिक शोधों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिक्षा के क्षेत्र में दृश्य–श्रव्य प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति को न केवल बढ़ाया जा सकता है बल्कि उसकी प्रभावशीलता में भी गुणात्मक सुधार किया जा सकता है। आज शिक्षा पूर्णतया व्यवसायिक रूप धारण करती जा रही है और शिक्षा के इस रूप परिवर्तन में मल्टीमीड़िया का विशेष योगदान है। मल्टीमीड़िया के अन्तर्गत आने वाले संसाधनो जैसे ओवर हैड प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर, टेलीकाफ्रेसिंग, सी0डी0, ई0 लर्निंग, फैक्स आदि के उपयोग से शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सुरूचिपूर्ण, बोधगम्य एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। विषय सामग्री को प्रभावशाली बनाने मे मल्टीमीड़िया का महत्वपूर्ण स्थान है।

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिलक्षित हो रहा है। इन्टरनेट के प्रयोग से जटिल से जटिल विषम से सम्बन्धित सामग्री सभी को सहजता से उपलब्ध है। आज हम डिजीटल पुस्तकालय, वर्चुअल क्लासेज आदि से परिचित हो रहे हैं। वर्तमान वैश्विक परिवेश में सूचना क्रान्ति एवं आधुनिक संचार साधनों ने विश्वग्राम की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान किया है। अब आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक एवं छात्र अपने आप को इस बदलती हुई संस्कृति के अनुसार न केवल तैयार करें, बल्कि समाज एवं सस्कृति को भी तदनुरूप बदलने में अपनी भूमिका सुनिश्चित करें। सूचना प्रोद्योगिकी आज की शिक्षा व्यवस्था की धुरी बन चुकी है यदि हमें अपने आप को वैश्विक परिदृश्य में बनाये रखना है तो सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व को स्वीकार करना होगा और समाज के लक्ष्यों के अनुरूप अपनी शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार करने होंगे। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित नवाचारों को अपनाना होगा।

आजकल शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नवाचारों का प्रयोग हो रहा है। इन नवाचारों में मल्टीमीडिया, सेटेलाइट सम्प्रेषण, इन्टरनेट, ई–मेल, व्यक्तिगत अनुदेशन प्रणाली, मस्तिष्किय मानचित्र आदि का प्रयोग शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिये किया जा रहा है। इन नवाचारों का प्रयोग करके हम छात्रों की मानसिक क्षमता को बढ़ा सकते हैं, उनमे तर्क करने की, कल्पना करने की अभूतपूर्व शक्ति विकसित कर सकते हैं। कक्षा में खुशनुमा माहौल पैदा करके विषय को मजेदार तरीके से प्रस्तुत करके हम अपने शिक्षण को प्रभावशाली बना सकते हैं। आनन्दपूर्वक प्रदान किया गया शिक्षण भी शिक्षण प्रक्रिया का एक प्रभावशाली उपागम है। इस बात की पुष्टि शोधों एवं अनुभवों द्वारा हो चुकी है।

अधिगम प्रक्रिया मे शिक्षक स्त्रोत के रूप में सूचना को छात्र तक पहुँचाता है और छात्र ग्राही के रूप में उसे ग्रहण करता है। यह हमारे शिक्षण व्यवस्था की पारम्परिक अवधारणा है जिसे विभिन्न शैक्षिक तकनीकी के द्वारा और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। अतः शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के लिये इन नवीन तकनीकियों की जानकारी एवं उसका उपयोग आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य हो गया है इसके अभाव मे हम समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने मे असमर्थ रहेंगे।

lUnHkZ lwph&

1. कोली लक्ष्मी नारायण – रिसर्च मैथडोलॉजी वाई0के0पब्लिशर्स
2. तिवारी पुरूषोत्तम – नई दिल्ली पुस्तकालय मूल्याकंन ए0पी0एस0 पब्लिशर्स, 2013
3. त्रिपाठी एस0एम0 – ग्रंथालय विज्ञान के पॉच सूत्र आगरा वाई0के0 पब्लिशर्स 1999
4. त्रिपाठी एस0एम0 – प्रलेखन एवं सूचना सेवाए आगरा वाई0के0 पब्लिशर्स